बेयरफुट कॉलेज - ग्रामीण प्रतिभाओं को अवसर

भारत डोगरा

बाबा आमटे ने एक बार कहा था कि हमारे गांवों के निर्धन व अशिक्षित लोगों को दान नहीं चाहिए, उन्हें तो बस उचित अवसर चाहिए। ऐसे अवसर जहां उनकी छिपी हुई, युवावस्था में ही मुरझा रही प्रतिभाओं को खिलने का भरपूर अवसर मिल सके।

एक ओर तो ग्रामीण निर्धन परिवारों को उच्च शिक्षा और डिग्री-डिप्लोमा तक पहुंचने के अवसर बहुत ही कम हैं, दूसरी ओर, ऊंची डिग्रियों की सोच में जकड़ा सरकारी तंत्र इससे वंचित गांववासियों को कोई बड़ी ज़िम्मेदारी देना भी नहीं चाहता है। नतीजा यह है कि जिन गांववासियों को अपने परिवेश व पर्यावरण की, गांव की वास्तविक स्थिति की सबसे बेहतर समझ है, उन्हें समस्याओं के समाधान से जुड़ने का कोई बड़ा अवसर ही नहीं मिलता। मौजूदा तंत्र महज़ अकुशल मज़दूर के रूप में ही उनका दोहन करता रहता है।

पर यदि ग्रामीण प्रतिभा में विश्वास किया जाए, उन्हें उभरने का भरपूर अवसर दिया जाए, उन्हें बड़ी ज़िम्मेदारी दी जाए व इसके अनुकूल अवसर भी दिए जाएं तो ये ग्रामीण प्रतिभाएं कितनी आगे जा सकती हैं इसका बेहद प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है बेयरफुट कॉलेज ने। इसका मुख्य केंद्र अजमेर के तिलोनिया गांव में स्थित है।

'बेयरफुट' का शाब्दिक अर्थ तो 'नंगे पैर' है पर इस शब्द का उपयोग प्रायः एक विशेष संदर्भ में किया गया है। जब जगह-जगह यह देखा गया कि ऊंची डिग्रियों व तमाम ताम-झाम से लैस शहरी विशेषज्ञ गांवों व निर्धन परिवारों में ठीक से काम नहीं कर पा रहे हैं तो इन परिवारों में भलीभांति मिल-जुलकर कार्य कर सकने वाले व्यक्तियों को यहां की परिस्थितियों व ज़रूरतों के अनुकूल प्रशिक्षण दिया गया। चाहे इस प्रशिक्षण में ऊंची डिग्रियों के कोर्स का पूरा ज्ञान न था पर इसमें ग्रामीण परिवेश की अधिकांश ज़रूरतों को अधिक असरदार ढंग से पूरा करने की जानकारी थी। इस तरह का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अधिकांश सदस्य भी प्रायः उसी परिवेश से थे जिसमें उन्हें काम करना था।

इस तरह के प्रशिक्षार्थियों व कर्मियों को 'बेयरफुट' का नाम दिया गया है। जैसे चीन में स्वास्थ्य सुधार के महत्त्वपूर्ण व सफल दौर में 'बेयरफुट' डॉक्टरों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी गई है। इसी तरह बेयरफुट वैज्ञानिक व बेयरफुट इंजीनियर भी समय-समय पर चर्चित हुए हैं।

राजस्थान स्थित बेयरफुट कॉलेज ने इस अवधारणा को और व्यापक बनाया है व तरह-तरह के क्षेत्रों में ग्रामीण प्रतिभाओं को उनके परिवेश व ज़रूरतों के अनुसार उभरने, निखरने व कार्य करने का अवसर दिया है। यहां आपको बेयरफुट डॉक्टर मिलेंगे, तो बेयरफुट टीचर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट व पानी की गुणवत्ता जांचने वाले व कम्यूनिटी रेडियो चलाने वाले भी मिलेंगे। हालांकि इस कॉलेज का मुख्य परिसर तो अजमेर ज़िले के तिलोनिया गांव में स्थित है, पर यहां की सोच से प्रभावित सामाजिक कार्यकर्ताओं ने देश के अनेक अन्य भागों में 'बेयरफुट कॉलेज' के उदाहरण से मिलते-जुलते संस्थान आरंभ किए हैं व इस तरह यह सोच और व्यापक स्तर पर फैल सकी है।

आइए 'बेयरफुट' सोच से उभरी कुछ प्रतिभाओं से परिचय करें।

• त्योद गांव, अजमेर ज़िले की सीता देवी ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, पर जब उसे युवावस्था में हैंडपंप की मरम्मत और रख-रखाव सीखने का अवसर प्राप्त हुआ तो उसने यह काम बहुत कुशलता से सीखकर आसपास के गांववासियों को भी हैरान कर दिया। एक 'बेयरफुट' हैंडपंप मैकेनिक के रूप में सीता ने 6 गांवों के लगभग 100 हैंडपंपों की ज़िम्मेदारी भलीभांति निभाई।

इसके कुछ वर्ष बाद सीता को एक अन्य अवसर मिला कि वह ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा सिस्टम लगाने व उसके रख-रखाव का प्रशिक्षण प्राप्त कर सके तो इस ज़िम्मेदारी

का भी सीता ने भरपूर लाभ उठाया। इस प्रशिक्षण के बाद सीता ने शहनाज़, श्यामा व कमला के साथ मिलकर वीमेन बेयरफुट सोलर कुकर इंजीनियर सोसाइटी की स्थापना की। यह ग्रामीण महिलाओं की रजिस्टर्ड संस्था है जो पैराबॉलिक सोलर कुकर के उत्पादन व स्थापना के कार्य की पूरी ज़िम्मेदारी संभालती है। इस सोसाइटी की महिला सदस्यों को कुछ समय पहले तिलोनिया गांव में मिलने पर उन्होंने विस्तार से यहां स्थापित पैराबॉलिक सोलर कुकर के बारे में समझाया कि किस तरह भलीभांति नाप-जोख कर कार्य किया जाता है जिससे सौर ऊर्जा का बेहतर उपयोग किया जा सके।

• किशनगढ़ प्रखंड के एक गांव में एक युवा पुजारी के रूप में कार्यरत भगवतनंदन को तिलोनिया गांव में चल रहे अक्षय ऊर्जा ने आकर्षित तो बहुत किया, पर आरंभ में इस कार्य से जुड़ने में कई कठिनाइयां भी आई। धीरे-धीरे भगवतनंदन जैसे कार्यकर्ताओं की मेहनत और निष्ठा से सौर ऊर्जा का कार्य आगे बढ़ने लगा व आज ऐसी स्थिति है कि यहां अफ्रीका, एशिया व लैटिन अमरीका के लगभग 25 देशों से आए गांववासियों, विशेषकर महिलाओं को सौर ऊर्जा का प्रशिक्षण दिया जाता है।

अपने देश के सुदूर रेगिस्तानी व पर्वतीय गांवों को भी सौर ऊर्जा से रोशन करने में यहां के प्रशिक्षणार्थियों ने सफलता प्राप्त की है।

• लीला की औपचारिक शिक्षा तो काफी कम रही है व जब विवाह के बाद वह तिलोनिया परिसर में आई तो पहले सिलाई का काम ही संभाला। पर कुछ समय बाद सौर ऊर्जा सम्बंधी कार्य सीखने का अवसर मिला तो लीला ने इसे उत्साह से स्वीकार किया। प्रशिक्षण कुछ समय तो अच्छा चला पर बाद में गणित का अधिक ज्ञान मांगने वाली चुनौतियां सामने आईं। यह स्थिति कठिनाई भरी थी पर 'जहां चाह वहां राह' - लीला ने सीखने का कोई न कोई तरीका खोज ही लिया व शीघ्र ही अपने कार्य में दक्ष हो गई। लीला ने न केवल सौर उपकरण बनाए अपितु रात्रि पाठशाला या अन्य स्थानों पर जाकर उनके रख-रखाव की व्यवस्था भी की।

फिर इससे भी बड़ी चुनौती तब आई जब लीला और उसकी साथी मगन, कंवर, नजमा, गुलाब आदि को विदेश के गांवों से आई महिलाओं के प्रशिक्षण का कार्य सौंपा गया। एक बड़ी समस्या भाषा की थी। पर एक बार फिर ज़रूरत के मुताबिक समाधान खोजे गए और न केवल प्रशिक्षण सफल सिद्ध हुआ अपितु इस दौरान आपसी लगाव इतना बढ़ गया कि इन महिलाओं के अपने देश लौटने के समय की विदाई में आंसुओं की धारा बह चली।

इन महिलाओं ने अपने-अपने देश लौटकर अपने गांवों में सफलतापूर्वक सौर ऊर्जा सिस्टम स्थापित किए।

अफगानिस्तान से 26 वर्षीय महिला गुल जमान अपने पति मोहम्मद जान के साथ सोलर सिस्टम की स्थापना और रख-रखाव के प्रशिक्षण के लिए तिलोनिया आई। यहां प्रशिक्षण प्राप्त कर वे अपने गांव में लौटे व उन्होंने वहां के 50 घरों को सौर ऊर्जा से आलोकित किया।

इन सभी कहानियों की प्रेरणा स्थली है बेयरफुट कॉलेज। प्रत्यक्षतःतो बेयरफुट कॉलेज इस क्षेत्र के लगभग 200 गावों में कार्य करता है, पर अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से व बेयरफुट कॉलेज द्वारा प्रेरित अन्य प्रयासों के माध्यम से इस संस्थान की पहुंच भारत व भारत से बाहर, विशेषकर अफ्रीकी देशों में इससे कहीं अधिक गांवों तक है।

बेयरफुट कॉलेज का आरंभ सामाजिक कार्य व अनुसंधान केंद्र के नाम से वर्ष 1972 में हुआ था। इस संस्थान के कार्य का एक प्रमुख दिशा निर्देश यह रहा है कि अपनी समस्याओं को स्वयं सुलझाने की गांववासियों की अपनी क्षमता में विश्वास रखो और उसे प्रोत्साहित करो। पिछले4

दशकों के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के अनुभव से गांववासियों की क्षमता में बेयरफुट कॉलेज का यह विश्वास और दृढ़ हुआ है।

बेयरफुट कॉलेज के निदेशक बंकर राय के अनुसार गांववासियों की सही स्थिति से बेखबर बाहरी विशेषज्ञों के ज्ञान को गांवों पर ज़बरदस्ती लादने से बहुत क्षति हो चुकी है, मगर इस कड़वे अनुभव से सबक नहीं लिए गए हैं। यदि गांववासियों व विशेषकर निर्धन परिवारों को विश्वास में लिया जाए व उनके ग्रासरूट के अनुभवों, स्थानीय जानकारी व क्षमताओं का सही उपयोग किया जाए तो समस्याओं के कहीं बेहतर व सस्ते समाधान मिलते हैं।

बेयरफुट कॉलेज ने इसी समझ से काम किया व गांव समुदाय के साधारण, कम शिक्षित महिला-पुरुषों में से ही प्रशिक्षित बेयरफुट शिक्षकों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, जल व सौर ऊर्जा इंजीनियरों की समझ व कुशलता में विश्वास रखकर उन्हें बड़े कार्यक्रमों की ज़िम्मेदारी सौंपी जिन्हें उन्होंने अच्छी तरह निभाया भी।

बेयरफुट सोच ग्रामीण निर्धन वर्ग की समझ, रचनात्मकता, व्यावहारिक ज्ञान व कठिन परिस्थितियों से जूझने की क्षमता में दृढ़ विश्वास पर आधारित है। यही कारण है कि बंकर राय के शब्दों में, बेयरफुट कॉलेज में किसी व्यक्ति की परख उसकी डिग्री या डिप्लोमा से नहीं होती है अपितु उसकी ईमानदारी, निष्ठा, करुणा, व्यावहारिक कुशलता, रचनात्मकता, परिस्थितियों के अनुसार ढलने, सीखने-सुनने की तत्परता व सभी तरह के भेदभाव से ऊपर उठकर कार्य करने की क्षमता से आंकी जाती है।

बेयरफुट कॉलेज के प्रणेता बंकर रॉय

बंकर राय की अपनी शिक्षा देश के सबसे विख्यात शिक्षा संस्थानों में हुई है, पर वे कहते हैं कि बेयरफुट कॉलेज को स्थापित करने के साथ उन्होंने गांववासियों की क्षमताओं को कम करके आंकने की सोच से छुटकारा प्राप्त किया व यह सीखा कि गांव समुदाय की समस्याओं को सुलझाने की अपनी क्षमता और अपने विश्वास को दृढ़ करना ही वास्तविक सशक्तीकरण है।

गांववासियों में विश्वास का ही परिणाम था कि बेयरफुट कॉलेज के परिसर की डिज़ाइन बनाने का कार्य गांववासियों ने ही संभाला व इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। यहां सामान्य बिजली के स्थान पर केवल सौर ऊर्जा का उपयोग करना भी चुनौती भरा कार्य था क्योंकि इस परिसर को लगभग 500 लाइट, अनेक पंखों, एक फोटोकॉपियर, 30 कंप्यूटर व प्रिंटर, एक पंप सेट, एक छोटे टेलीफोन एक्सचेंज व दूध रखने के फ्रीज़र की ज़रूरत थी। पर इस चुनौती को यहां के बेयरफुट सौर ऊर्जा इंजीनियरों ने स्वीकार किया, और सफलतापूर्वक पूरा किया। आज यह परिसर सौर ऊर्जा से ही चलता है।

पर गांववासियों की क्षमताओं में मात्र विश्वास ही पर्याप्त नहीं है। बेयरफुट कॉलेज की सोच के सफल क्रियान्वयन के लिए और भी बहुत कुछ ज़रूरी है। यहां के कार्यक्रमों की एक मुख्य विशेषता यह है कि कोई भी कार्य गांववासियों की अधिकतम भागीदारी से ही आगे बढ़ता है। किसी गांव में कोई कार्य तभी आरंभ होता है जब उस गांव समुदाय से इसकी मांग आती है। इस बारे में निर्णय गांव समुदाय लेते हैं व फिर क्रियान्वयन विभिन्न ग्राम समितियों को सौंप दिया जाता है। संस्था के कार्यक्षेत्र में जल समितियों, शिक्षा समितियों व ऊर्जा या पर्यावरण समितियों की स्थापना की गई है। ये समितियां ही परियोजना के धन के उपयोग व इसके बैंक अकाउंट के संचालन के लिए ज़िम्मेदार होती हैं। अनेक तरह की ज़िम्मेदारियां लोग मिल-बांट कर उठा लेते हैं। प्रोजेक्ट का कार्य तब तक पूरा नहीं माना जाता है जब तक कि उसे गांव समुदाय की स्वीकृति न मिल जाए व समिति के सदस्य इस स्वीकृति पर हस्ताक्षर न कर दें। इस पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता और ज़िम्मेदारी स्वीकार करना व निभाना आरंभ से अंत तक जुड़े हुए हैं, व यही बात बेयरफुट कॉलेज के अपने संचालन के बारे में भी कही जा सकती है।

बेयरफुट कॉलेज का सदा प्रयास रहा है कि कमज़ोर व

निर्धन समुदायों को अपने कार्य में प्राथमिकता दी जाए। इन समुदायों के कम पढ़े-लिखे व कभी-कभी तो निरक्षर व्यक्तियों को बेयरफुट कॉलेज ने पर्याप्त प्रशिक्षण देकर बेयरफुट शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, डिज़ाइनर, हैंडपंप मैकेनिक आदि के रूप में तैयार किया है। इनकी सफलता ने गांव समुदायों की आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास को बढ़ाया है।

बेयरफुट कॉलेज का एक बुनियादी मूल्य यह है कि धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर किसी भी भेदभाव को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जाएगा। संस्थान के आंरभिक दिनों में रसोई कार्य दलित व्यक्ति को सुपुर्द करने जैसे निर्णयों पर दबे-छिपे विरोध प्रकट होता रहता था पर बंकर राय ने स्पष्ट कह दिया कि चाहे मुझे इस रसोइए के साथ अकेले रहना पड़े पर किसी तरह के भेदभाव को मैं स्वीकार नहीं करूंगा। अंत में भेदभाव को पूरी तरह समाप्त करने के निर्णय को संस्थान के सब सदस्यों ने स्वीकार कर लिया व अब यह स्थिति है कि दलित समुदाय के सदस्यों को संस्थान में लाने व ज़िम्मेदारी संभालने के लिए विशेष तौर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

संस्था का एक अन्य बुनियादी मूल्य सादगी है। संस्थान के निदेशक को भी राजस्थान के मज़दूरों के लिए तय न्यूनतम मज़दूरी के बराबर ही वेतन मिलता है। अनेक ख्याति प्राप्त पुरस्कारों आदि से प्राप्त राशि भी वे संस्थान को समर्पित करते रहते हैं। वेतन सम्बंधी अंतर संस्थान में न्यूनतम रखे जाते हैं।

इन मूल्यों के आधार पर संस्थान ने कम बजट में ही उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की हैं। बेयरफुट कॉलेज के शैक्षिक प्रयास सबसे निर्धन बच्चों की शिक्षा पर केंद्रित हैं जिनमें से अधिकांश पशु चराने का कार्य करते हैं। ये वे बच्चे हैं जो विभिन्न कारणों से सामान्य स्कूल में पढ़ नहीं पाए। बेयरफुट कॉलेज की रात्रि शालाओं ने ऐसे हज़ारों बच्चों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवाए हैं। बाद में इनमें से अनेक विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास भी ब्रिज कोर्सों के माध्यम से किया गया जो काफी सफल रहा है। इस शैक्षिक प्रयास की ज़िम्मेदारी गांव समुदाय से चुने गए बेयरफुट अध्यापकों को दी गई।

बेयरफुट कॉलेज के अक्षय ऊर्जा कार्यक्रम ने भारत व 25 अन्य देशों में हज़ारों गांवों तक सौर ऊर्जा पहुंचाने में सहायता की है। इस प्रक्रिया में सैकड़ों बेयरफुट सोलर इंजीनियरों का प्रशिक्षण हुआ है। इस तरह ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विकेन्द्रित अक्षय ऊर्जा का एक ऐसा मॉडल तैयार हुआ है जो जलवायु परिवर्तन के इस दौर में अक्षय ऊर्जा की अधिक ज़रूरत को देखते हुए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

बेयरफुट कॉलेज के जल संरक्षण व संग्रहण कार्यक्रम ने सैकड़ों गांवों व स्कूलों की अपनी जल व सफाई की ज़रूरतों को पूरा करने में सहायता की है। संस्थान ने ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित कर बेयरफुट हैंडपंप मैकेनिक का मॉडल लोकप्रिय किया जिसे आगे चलकर राजस्थान व अन्य राज्यों में बड़े पैमाने पर अपनाया गया।

संस्थान के स्वास्थ्य कार्यक्रम व इसकी प्रशिक्षित 'बेयरफुट' दाइयों, डॉक्टरों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं व बालवाड़ियों ने मातृ और बाल मृत्यु दर को कम करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। यह तथ्य 'एकत्र' संस्थान द्वारा किए गए आकलन में उभर कर आया है।

बेयरफुट कॉलेज से जुड़े हुए अनेक दस्तकारों ने अपने गांवों में ऐसे उत्पाद बनाए हैं जिन्हें प्रतिष्ठित बड़े शहरों की प्रदर्शनियों में भी प्रशंसा मिली है।

बेयरफुट कॉलेज से जुड़े महिला समूह बिना किसी आर्थिक सहयोग के गठित हुए हैं। वे लिंग आधारित भेदभाव व अन्य समस्याओं से संघर्ष में अपनी गहरी निष्ठा के लिए जाने जाते हैं। इनके कार्यक्षेत्र में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा में महत्त्वपूर्ण कमी आई है व लड़कियों की शिक्षा में उत्साहजनक वृद्धि हुई है। इन महिला समूहों के गठन व संचालन में अरुणा राय की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इन महिला समूहों की सदस्यों ने आगे आकर सूचना के अधिकार व रोज़गार गारंटी के आंदोलनों में बहुत अहम भूमिका निभाई।

संस्थान के इन विभिन्न कार्यक्रमों से गांववासियों विशेषकर कमज़ोर तबकों की क्षमताएं और आत्मनिर्भरता आगे बढ़ती हैं, बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने व जीवन स्तर को सुधारने में सहायता मिलती है, वह भी टिकाऊ, पर्यावरण-

अनुकूल तौर-तरीकों से। इन विभिन्न ज़िम्मेदारियों को निभाने में लगे संस्थान के विभिन्न विभागों व फील्ड-केंद्रों आदि को अपने कार्य में संस्थान के बुनियादी मूल्यों का निर्वाह करते हुए पूरी स्वतंत्रता दी जाती है। इनके प्रतिनिधि निरंतर आपस में मिलते हैं, मूल्यांकन करते हैं, समस्याएं सुलझाते हैं व आगे की योजना बनाते हैं।

विभिन्न परियोजनाओं से आगे जाकर बेयरफुट कॉलेज व उसके सहयोगी संस्थान न्याय, समता, लोकतंत्र व भाईचारे के मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध हैं व इन मूल्यों से जुड़े अनेक अभियानों में अमूल्य योगदान देते रहे हैं। न्यूनतम मज़दूरी, रोज़गार गारंटी व सूचना के अधिकार अभियानों में संस्थान नज़दीकी तौर पर जुड़ा रहा है। संस्थान की रात्रि शालाओं में कच्ची उम्र से ही लोकतंत्र का प्रशिक्षण आरंभ हो जाता है व बच्चे अपनी संसद और मंत्रिमंडल चुनते हैं। कानूनी न्यूनतम मज़दूरी सब मज़दूरों को सुनिश्चित करने के लिए बंकर राय व संस्थान के कार्यकर्ताओं ने सुप्रीम कोर्ट तक केस लड़ा जिसके निर्णय का लाभ राष्ट्र स्तर पर मिला।

कमज़ोर समुदायों में से भी सबसे कमज़ोर व्यक्तियों को चुनकर बेयरफुट कॉलेज ने उन्हें अपनी प्राथमिकता बनाया है। गांव में अधिक प्राथमिकता दलित समुदाय को दी गई व दलित समुदाय में भी महिलाओं को। किसी भी कमज़ोर समुदाय में विकलांगों की ज़रूरतों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

इस तरह की प्राथमिकताओं का परिणाम आज यह है कि कितने ही विकलांग व्यक्ति बहुत आत्म विश्वास व निष्ठा से संस्थान की अनेक महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारियों को संभाले हुए हैं। मूक-बधिर होते हुए भी गिरीराज ने अपनी स्क्रीन प्रिंटिग यूनिट में अनेक जन आन्दोलनों को आगे बढ़ाने वाले पोस्टर तैयार किए हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने अनेक नए साथियों को स्क्रीन प्रिटिंग का प्रशिक्षण भी दिया। नन्दो ने फोटोकॉपी का काम भली-भांति संभाला है तो गोपाल ने टेलीफोन एक्सचेंज का। बृजपुरा फील्ड सेंटर के तो संचालन की मुख्य ज़िम्मेदारी ही इस समय मिश्रीलाल जी के पास है, जो अपनी लाठी के सहारे चलते हुए बहुत मुस्तैदी से किसी भी ज़िम्मेदारी को संभालने के लिए आगे रहते हैं। इन ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह निभाने में जहां ये कार्यकर्ता प्रशंसा के पात्र हैं, वहीं इसका श्रेय संस्थान के उस माहौल व उन मूल्यों को भी मिलना चाहिए जो विकलांग साथियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

कबाड़ से जुगाड़ का एक यूनिट बेयरफुट कॉलेज में है जिसमें बहुत रचनात्मक कार्य होता है व इसमें मुख्य योगदान विकलांग साथियों का रहा है। विज्ञान शिक्षा में विशेष तौर पर काम आने वाले खिलौने भी यहां बनाए जाते हैं। पोलीथीन के प्रकोप से बचने के लिए यह युनिट तरह-तरह के पेपर बैग्स व लिफाफे भी उपलब्ध करवाता है।

संस्थान की रात्रि शालाओं में पढ़ने वाले कई विद्यार्थियों को बचपन में ही सामाजिक कार्य के संस्कार मिले। बाद में इनमें से कई बच्चे पढ़-लिख कर इस संस्थान में ही लौट आए व इसकी कई गतिविधियों से जुड़ गए। इस तरह संस्थान को कई निष्ठावान युवा कार्यकर्ता भी प्राप्त होते रहते हैं।

संस्थान के वरिष्ठ कार्यकर्ता भंवर सिंह बताते हैं कि इस कार्य का असर काफी दूर-दूर तक पहुंचा है क्योंकि यहां के प्रशिक्षण से प्रेरणा प्राप्त कर कई कार्यकर्ताओं ने देश में कई स्थानों पर इन्हीं मूल्यों पर आधारित संस्थान खड़े किए हैं। बंकर राय के अनुसार बेयरफुट कॉलेज से प्रेरणा पाकर लगभग 20 संस्थान भारत के 13 राज्यों में कार्य आरंभ कर चुके हैं।

राजस्थान के बारां ज़िले में सहरिया आदिवासियों की हकदारी में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त करने वाली संस्था 'संकल्प' के समन्वयक मोती ने बताया कि जब उनके कार्य में बहुत कठिनाई आई तो सबसे अधिक सहयोग बेयरफुट कॉलेज व उसके निदेशक बंकर राय से ही मिला। इस प्रोत्साहन व सहयोग के आधार पर ही वे लौट कर अपना कार्य फिर संजो सके।

मध्यप्रदेश के झाबुआ ज़िले में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त करने वाली संस्था 'संपर्क' के समन्वयक निलेश देसाई कहते हैं, आरंभिक दिनों में हमने तिलोनिया में बंकर व अरुणा राय से बहुत कुछ सीखा व यह प्रेरणा आज भी हमारे साथ है। ***(स्रोत फीचर्स)***